सोलन जनपद में मंगलामुखी जाति का अध्यातम व संगीत के क्षेत्र में योगदान

MS. PRIYANKA
Research Scholar, Department of Music, Himachal Pradesh University, Summerhill, Shimla

सार संक्षेपिका

मंगलामुखी एक एतिहासिक जाति है। इनका मुख्य व्यवसाय गाना बजाना अर्थात संगीत है। प्राचीन काल में जितने भी आध्यात्मिक कार्य किए जाते थे उन कार्यों में मंगलामुखियों का सर्वश्रेष्ठ योगदान रहता था। भारतीय धर्मशास्त्र में जितने भी 16 संस्कार है उन सभी सांस्कारिक कृत्यों के साथ मंगलामुखियों का अटूट सम्बन्ध रहा है। इसी प्रकार हमारे जीवन कें साथ साथ देवी देवताओं की पूजा अर्चना तथा मेले एंव उत्सवों में भी इनका विशेष स्थान रहता है। प्रत्येक धार्मिक स्थान और उन स्थानों पर मनाए जाने वाले मेले एंव उत्सवो में मंगलामुखी विशेष भूमिका अदा करते है। किसी भी देवालय में तब तक पूजा आरम्भ नही की जाती है जब तक मंगलामुखी अपना वादन प्रारम्भ नही करते तब तक देव पूजा प्रारम्भ नही हो सकती। मंगलामुखी के लोगों में आध्यात्मिकता देखने को मिलती है क्योंकि प्रत्येक शुभ मांगलिक कार्यो का आरम्भ मंगलामुखियों द्वारा सम्पन्न किया जाता हैं।

इस शोध कार्य में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

बीज शब्द

मंगलामुखी, संगीत्, अध्यात्म

भूमिका

भारत वर्ष अनेक राज्यों का समूह है, जिसमें निर्वासित लोग विभिन्न सभ्यताओं और संस्कृतियों का उदगम स्त्रोत रहा है। हिमाचल प्रदेश न केवल सौन्दर्य एवम समन्वयात्मक भारतीय संस्कृति का प्रतीक रहा है, अपितु अपने संगीत के कारण भारतीय सांस्कृतिक परम्पराओं में भी इसका मूर्धन्य स्थान रहा है। हिमालय की गोद में बसे इस प्रदेश का प्रत्येक क्षेत्र संगीत तथा नृत्य गीतों से अछूता नही है। स्वतंत्रता से पूर्व हिमाचल प्रदेश छोटी बड़ी रियासतों एवं ठकुराईयों में विभक्त था। इन रियासतों पर राणे और ठाकुर शासन किया करते थे। सोलन बघाट की राजधानी थी। इसके अतिरिक्त कुनिहार, महलोग, बेजा, नालागढ, कुठार तथा बाघल रियासतें भी इसी जिले के अंतर्गत आती है। इसी प्रकार सोलन जिले की छोटी रियासतों एवं ठकुराइयों का अदभुत महत्व रहा है।

सोलन जनपद में मंगलामुखी एक ऐसी जाति है जिनका कार्य संगीत व अध्यात्म के साथ जुड़ा हुआ है। मंगलामुखी एतिहासिक जाति है, रियासती काल में मंगलामुखियों का श्रेष्ठ स्थान रहा है, क्यांकि राजदरबारों में जो स्थान दरबारी रत्नों का होता था वही स्थान मंगलामुखियों को भी प्राप्त था। अधिकतर राजदरबारों में इन्हें इतना महत्वपूर्ण समझा जाता था कि राजा का जागरण, शयन इत्यादि सभी संगीतमय होता था। इसके अतिरिक्त विशेष पर्व,संस्कार,उत्सवों में इनकी विशेष भूमिका रही है और इन्हें वस्त्राभूषण तथा राजदरबारों की कुछ उपाधियों से अलंकृत किया जाता था अर्थात रियासती काल में मंगलामुखियों का सम्मानजनक एंव प्रतिष्ठामय स्थान रहा है।

मंगलामुखी जाति की उत्पति

मंगलामुखी जाति की उत्पति कैसे हुई इसके पिछे कई किवदन्तियां छुपी हुई हैं। इस जाति के विषय में जानकारी अनुसन्धानकर्ता को एक किवदन्ती के अनुसार प्राप्त हुई है। इस जाति के वृद्ध लोग अपने आप को वीणा सन्तति मानते हैं। ये कहते है कि नारद की वीणा से उत्पन्न गन्धर्व ही इनके जनक है। इनके अनुसार इन गन्धर्वो द्वारा राजा ने अधिकार करके सभी गन्धर्वो व रागनियों सहित अपने भवन में रख लिया था और वहां रात दिन स्वर संगीत की ध्वनियां तथा नृत्य होते रहते थे। इन्द्र महाराज भी संगीतमयी लहरियो में डूब गए थे यहां तक कि वे अपनी शचिरानी को भूल गए थे। एक दिन इन्द्र महाराज ने मदहोश होकर रागनियों से छेड़छाड़ कर दी इस वजह से गंधर्व गण कुपित हो उठे और स्वर्ग लोक से मृत्यु लोक पर उतर आए और साथ में शचिराणी का भी अपहरण करके पृथवी ले आये। इन्द्र को इस बात का पछतावा हुआ, और इन्द्र लोक संगीत शुन्य हो गया। यह सब देख कर सभी देवतागण भगवान बिष्णु के सम्मुख उपस्थित हुए। शचिराणी सब भूल चूकी थी।

विष्णु भक्त नारद जी ने शचिराणी का मोह भंग करके उसे इन्द्रलोक की याद दिलाई और मेघों के वाहन पर बिठा कर वापिस इन्द्र लोक ले आए। शचिराणी के साथ गन्धर्व तथा उनकी रागनियां भी मृत्यु लोक से इन्द्र लोक वापिस आ गए थे। गन्धर्व व रागनियों से इन्द्र लोक एक बार फिर से संगीतमय हो गया था। मृत्यु लोक पर दो गन्धर्व ही शेष रह गए थे। इन्द्र लोक में जो अप्सराएं थी वह सभी गन्धर्वो की सन्तानें थीं। गन्धर्वो ने मृत्यु लोक में रहकर संगीत के उत्थान के लिए अनेक कार्य किए। कहते हैं गन्धर्व की सन्तानें कालान्तर में मंगलामुखी कहलाने लगी क्योंकि इनकी सन्तानें मंगल कार्यो में अपना गायन वादन व नृत्य प्रस्तुत करने लगीं। मंगलाचार के स्वर पाठ से ही इनका नाम मंगलामुखी हुआ।

सोलन जनपद के लोग अपनी स्थानीय भाषा में मंगलामुखी जाति अपनी स्थानीय भाषा में मंगलामुखी जाति को तूरी (मांगते) कहते हैं। तूरी नाम से सम्बोधित की जाने वाली यह जाति तुम्बरु ऋषि की औलाद मानी जाती है। तुम्बरु ऋषि एक महान संगीतज्ञ थे इन्होंने संगीत जगत को एक ऐसा यंत्र (तानपुरा) भेंट किया जो आज भारत संगीत का आधार माना जाता है।

विक्रमी संवत् के स्वागत में मंगल गान की परम्परा का अत्यन्त महत्व है। नव सम्वत्, चैत्र मास की संक्राति की मंगलामुखी जाति गायकों को बड़ी बेसब्री से प्रतीक्षा रहती है की। महीना गायन को गाने और सुनाने का अधिकार भी सामाजिक परम्परा में मंगलामुखी जाति को ही है। नए सम्वत् के पहले महीने का नाम मंगलामुखी गायक कलाकारों के मुख से सुनना शुभ माना जाता है। राजाओं के समय में भी चैत्र महीना गायन की परम्परा थी अर्थात सबसे पहले मंगलामुखी राजाओं मंत्रियों के परिवारों में तथा उसके बाद घर घर जाकर चैत्र महीने के गीतों को गाते थे। अब केवल घर घर जाकर गाने की परम्परा शेष बची है। मंगलामुखी जाति द्वारा खास तौर पर शिव विवाह गाकर

सुनाया जाता है और उसी के बीच में महीने का नाम भी सुनाया जाता है जिसे अत्यन्त शुभ माना जाता है।

पौराणिक मान्यताओ के अनुसार जब शिव जी विवाह करने जा रहे थे तो उन्होने सभी देव गणों से अपने विवाह के बारे में र्चचा की गई किस तरह से विवाह को संपन्न बनाया जाए। सभी तरह के कार्य सभी को दिए गए। शिव जी के मन में विचार आया कि बारात को ले जाना है और बारात को खाली नही ले जाया जा सकता। इससे शिवजी ने अपनी एक जंघा के मैल से मंगला को बनाया व दूसरी जंघा के मैल से जंगम बनाए। मंगला नाम की स्त्री से शिव जी ने कहा कि मुझे बारात को ले कर जाना है बारात को ले जाने के लिए गायन वादन व नृत्य का होना अत्यन्त आवश्यक है। मंगला ने अपने मैल से दो बालक बनाए जो गायन व वादन के लिए चुने गए। मंगला व इसके बालको ने शिवजी के विवाह में गायन वादन व नृत्य से सभी का मन मोह लिया। जब विवाह सम्पन्न हुआ तो महादेव ने सभी को कुछ न कुछ भेंट स्वरुप दिया। जब मंगला व उसके पुत्रों की बारी आई तो शिवजी के पास इन्हें देने के लिए कुछ नही बचा। शिव जी ने सोच विचार कर अपना एक महीना चैत्र मास दिया और इन्हें वरदान दिया कि इस महीने का नाम लेना तुम लोगों के मुख से शुभ माना जाएगा तथा घर घर जाकर शिव विवाह को गाकर सुनाया करोगे तथा इससे प्रसन्न होकर सभी लोग आप लोगो को अन्न धन व वस्त्र इत्यादि भेंट स्वरुप प्रदान करेगें।

मंगलामुखी जाति के लोग मनुष्य जीवन के प्रत्येक संस्कार व धार्मिक स्थानों पर मनाए जाने वाले मेले एवं उत्सवों में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। इसी प्रकार मनुष्य जीवन के संस्कारों के साथ साथ देवी देवताओं की पुजा अर्चना तथा मेले एवं उत्सवों में भी इनका विशेष स्थान रहता हैं। किसी भी मंदिर में तब तक पूजा प्रारम्भ नही होती जब तक मंगलामुखी अपना वादन प्रारम्भ नही करतें। इसके अतिरिक्त मेले उत्सवों में विशेष कार्यक्रम जैसे लोकगीत नाटियां इत्यादि सभी कार्यक्रम इनके द्वारा ही सम्पन्न होते हैं। यहां तक कि मेले में कुश्तियों का कार्यक्रम भी इनके द्वारा ही सम्पन्न होते हैं। यहां तक कि मेले में कुश्तियों का कार्यक्रम भी इनके ढोल वादन से प्रारम्भ होता है। कई धार्मिक मेलों में तो इनका स्वतन्त्र वादन भी होता है जो सामूहिक रुप से सम्पन्न होता है जिसमें ये लोग नौबत और कुछ पूजा से सम्बन्धित तालें आदि बजाते हैं। विवाह संस्कार व जन्म संस्कार में मंगलामुखी अपनी विशेष भूमिका अदा करता है। विवाह संस्कार में जब तक मंगलामुखी स्त्रियॉ अपना गायन शुरु नही करती तब तक कोई भी रस्म अदा नहीं की जाती।

मंगलामुखी जाति द्वारा प्रयुक्त वाद्यों में ढोल, नगारा, शहनाई, करनाल, रणसिंगा आदि प्रमुख हैं। विशेष उत्सवों पर शहनाई और ढोल वाद्य यन्त्रों पर वृन्दवादन भी पेश करते हैं जिसे स्थानीय भाषा में नौबत कहते हैं। इनके द्वारा बजाई जाने वाली तालें विशेष संस्कारों और पर्वो आदि से सम्बन्धित होती हैं। जिस ताल को जिस भी पर्व या संस्कार के नाम से पुकारा जाता है जैसे बघाई

ताल, मकलावा ताल, देव पूजन ताल, जंग ताल, चैत्री ताल इत्यादि। ये सब तालें शास्त्रीय संगीत की तालों कहरवा, दादरा, एकताल, दीपचन्दी, तीनताल, रुपक आदि के बराबर के माप की होती हैं। इसलिए हम कह सकते हैं कि मंगलामुखी जाति के कलाकार संगीत के क्षेत्र में अपना विशेष योगदान देते हैं।

उपसंहार

इस क्षेत्र के मंगलामुखियों के संगीत में यहां की संस्कृति के साक्षात दर्शन होते हैं। इनका संगीत लोगो के हर्षोल्लास, सुख, दुख, परस्पर मैत्री भाव, धार्मिक मान्यताओं से परिपूर्ण है। लोकसंगीत एवं लोकवाद्यों का यदि दार्शनिक अध्ययन किया जाए तो इस क्षेत्र में मंगलामुखी जाति के लोगों द्वारा इसका मूर्त रुप मुखरित होता है। इसलिए स्पष्ट है कि इस जाति के लोग ही हमारी वास्तविक सांस्कृतिक निधि के उतराधिकारी एवं संरक्षक हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

गर्ग नन्द लाल, हिमाचल के प्राचीन वाद्य, संगीत नाटक अकादमी, कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली, प्रकाशन।

शांड़िल्य, डॉ रामस्वरुप, हिमाचल प्रदेश के लोकसंगीत की परम्पराएं (सोलन जनपद के संदर्भ में) निर्मल पब्लिकेशन्स्, दिल्ली।

हरनोट,एस.आर., हिमाचल प्रदेश मन्दिर और लोकश्रुतियॉ शिमला–सोलन–सिरमौ–किन्नौर, आभी प्रकाशन, शिमला, हिमाचल प्रदेश।